Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

भारतीय राजनीति में लालकृष्ण आडवाणी का योगदान

Dr. Karamveer Singh*

Associate Professor, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध संक्षेप – *लालकृष्ण आडवाणी भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं। भारतीय जनता पार्टी को भारतीय राजनीति में एक प्रमुख पार्टी बनाने में उनके योगदान को सर्वोपरि कहा जा सकता है। वह कई बार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। जब भी भारतीय जनता पार्टी के इतिहास की बात होती है, तो यह देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी की चर्चा के बिना अधूरी रहेगी। यह आडवाणी थे जिन्होंने पार्टी के चुनाव चिन्ह की कल्पना की थी। कम ही लोग जानते होंगे कि जब जनता पार्टी के कई नेताओं ने जनसंघ को पूरे मन से स्वीकार नहीं किया था, तब अटल बिहारी बाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी के बीच एक अलग पार्टी बनाने पर चर्चा हुई थी। जब अटल जी ने इस पर अपनी सहमति दी, तो लालकृष्ण आडवाणी ने इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया और भाजपा की स्थापना हुई। जब इस नई पार्टी के चुनाव चिन्ह की बात आई, तो आडवाणी ने इसके लिए कमल के फूल का चुनाव चिह्न चुना। तब से, इस पार्टी का चिह्न कमल बन गया है। आज के समय में पार्टी देश पर राज कर रही है। इस शोध पत्र में लालकृष्ण आडवाणी के भारतीय राजनीति में योगदान का अध्ययन किया गया है।*

मुख्य बिंदु – *आडवाणी का योगदान, राजनीतिक जीवन, जनसंघ अध्यक्ष, आडवाणी और रथ यात्रा, स्वच्छ छवि, गुजरात से राज्यसभा सदस्य, वाजपेयी और मोदी के साथ आडवाणी के मतभेद, नरेंद्र मोदी और लालकृष्ण आडवाणी, विवादित बयान, वन मैन शो पार्टी।*

----------X----------

लालकृष्ण आडवाणी का जीवन परिचय

लालकृष्ण आडवाणी का जन्म 8 नवंबर 1927 को अविभाजित भारत के सिंध प्रांत में कृष्ण चंद डी आडवाणी और ज्ञानी देवी के घर हुआ था। लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लाहौर में की लेकिन बाद में भारत आ गए और गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, मुंबई से लॉ में स्नातक किया। आज वह भारतीय राजनीति में एक बड़ा नाम हैं। वह गांधी के बाद दूसरे लोक सेवक हैं। लालकृष्ण आडवाणी भारतीय जनता पार्टी के सह-संस्थापक और वरिष्ठ राजनेता हैं, जिन्होंने हिंदू आंदोलन का नेतृत्व किया और पहली बार भाजपा की सरकार बनाई। लेकिन कुछ समय से यह अपनी मौलिकता खोता नजर आ रहा है। आज, वह एक समझौतावादी प्रतीत होता है, इसके विपरीत आक्रामकता की छवि जिसके लिए वह जाना जाता था। आडवाणी, जिन्होंने हिंदुओं के बीच एक नई चेतना जगाई, नब्बे के दशक के आडवाणी की तलाश कर रहे हैं। वह अपनी बयानबाजी से काफी परेशान था। वह अपनी किताब और ब्लॉग से भी चर्चा में आए। आलोचना भी हुई। आडवाणी का राजनीतिक जीवन 1942 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक (आरएसएस) के स्वयंसेवक के रूप में शुरू हुआ। उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में देश के सातवें उप प्रधानमंत्री के रूप में भी काम किया है। वह 1998 से 2004 तक राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार में गृह मंत्री थे। वह 10 वीं और 14 वीं लोकसभा में विपक्ष के नेता थे। राजनीति के शिखर पर पहुंचने वाले लालकृष्ण आडवाणी को 2015 में देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

उद्देश्य

1. लालकृष्ण आडवाणी के राजनीतिक जीवन का अध्ययन करने के लिए।
2. भारतीय राजनीति और जनसंघ में लालकृष्ण आडवाणी की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. लालकृष्ण आडवाणी ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

www.ignited.in

2. बीजेपी के विकास में लालकृष्ण आडवाणी का बड़ा योगदान रहा है।

आँकड़ो का संग्रह

प्रस्तुत शोध पत्र में लालकृष्ण आडवाणी के राजनीतिक योगदान के अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ो का उपयोग किया गया है। अध्ययन हेतु सूचनाएं भारतीय संसद, चुनाव आयोग, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय, जनसंपर्क, व्यक्तिगत सम्पर्क, पत्र पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं अंतर्जाल के माध्यम से प्राप्त की गई हैं।

आडवाणी का योगदान

राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि जनसंघ से भाजपा तक की यात्रा में आडवाणी से ज्यादा योगदान किसी ने नहीं दिया। बीजेपी की दूसरी पीढ़ी यानी जो आज सरकार में बैठे हैं, उनमें से 90 प्रतिशत से अधिक को आडवाणी की देन माना जाता है।

1984 में लगातार हार के बाद 1996 में भाजपा को आगे बढ़ाने में आडवाणी के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

राम मंदिर आंदोलन और संघ परिवार के पूर्ण आशीर्वाद के दौरान देश में सबसे लोकप्रिय नेता होने के बावजूद, आडवाणी ने 1995 में वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करके सभी को चैंका दिया, जिस समय वह पीएम बन सकते थे, लेकिन आडवाणी ने कहा कि वहां भाजपा में वाजपेयी से बड़ा कोई नेता नहीं है। वह पचास साल तक वाजपेयी के साथ दूसरे नंबर पर रहे।

पचास साल से अधिक के राजनीतिक जीवन के बावजूद, आडवाणी पर कोई दाग नहीं था और जब कांग्रेस के नरसिम्हा राव ने 1996 के चुनावों से पहले हवाला कांड में विपक्ष के बड़े नेताओं को फंसाने की कोशिश की, तो आडवाणी ने इस्तीफा देने वाले पहले व्यक्ति थे और कहा कि वह नहीं करेंगे इस मामले में असफल होने से पहले चुनाव लड़ें और 1996 के चुनाव के बाद उन्हें मामले में बरी कर दिया गया। इतनी हिम्मत दिखाना हर किसी के बस की बात नहीं है।

राजनीतिक जीवन

1951 में, डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना की। तब से 1957 तक, आडवाणी पार्टी के सचिव थे। 1973 से 1977 तक, आडवाणी ने भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के बाद से, लालकृष्ण आडवाणी 1986 तक पार्टी के महासचिव थे। इसके बाद, उन्होंने 1986 से 1991 तक पार्टी के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी भी निभाई। इस दौरान, वर्ष 1990 में राम मंदिर आंदोलन, उन्होंने सोमनाथ से अयोध्या तक रथ यात्रा निकाली। हालांकि आडवाणी को बीच रास्ते में गिरफ्तार कर लिया गया था, लेकिन इस यात्रा के बाद आडवाणी का राजनीतिक कद बड़ा हो गया। 1990 की रथ यात्रा ने लालकृष्ण आडवाणी की लोकप्रियता को बढ़ाया। 1992 में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद, आडवाणी का नाम उन लोगों में शामिल है जिन पर आरोप लगाया गया है। लालकृष्ण आडवाणी ने तीन बार भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। आडवाणी चार बार राज्यसभा के सदस्य और पांच बार लोकसभा सदस्य थे। 1977 से 1979 तक पहली बार, लालकृष्ण आडवाणी ने केंद्र सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला। इस दौरान आडवाणी सूचना प्रसारण मंत्री थे। सत्ता का सबसे बड़ा कार्यालय जो आडवाणी ने राजनीतिक जीवन में आज तक धारण किया है, वह एनडीए शासन के दौरान उप प्रधान मंत्री का है। 1999 में एनडीए सरकार के गठन के बाद, लालकृष्ण आडवाणी अटल बिहारी वाजपेयी के तहत केंद्रीय गृह मंत्री बने और फिर 29 जून 2002 को उन्हें इस सरकार में उप प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी भी सौंपी गई। भारतीय संसद में एक

www.ignited.in

अच्छे सांसद के रूप में, आडवाणी को कभी उनकी भूमिका के लिए सराहा गया और कभी पुरस्कृत किया गया।

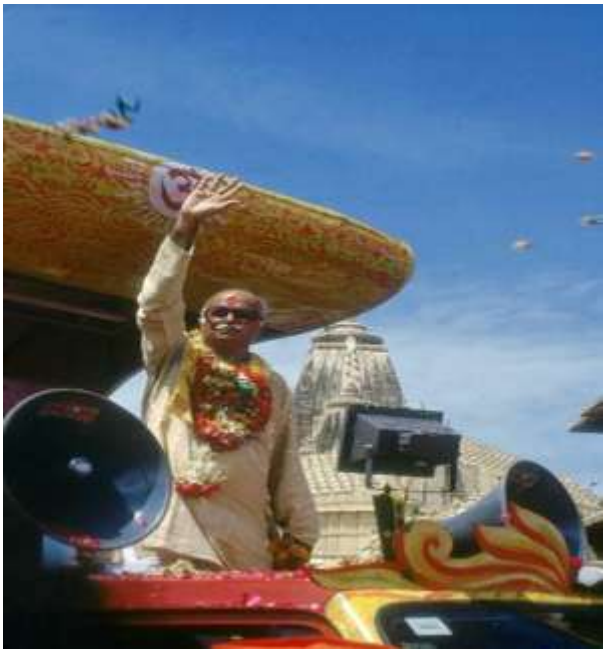

जनसंघ के अध्यक्ष

1951 में, आडवाणी आरएसएस के साथ श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा स्थापित राजनीतिक पार्टी भारतीय जनसंघ में शामिल हो गए। उन्हें राजस्थान में जनसंघ के महासचिव, एस.एस. भंडारी को सचिव बनाया गया। फिर वे 1957 में दिल्ली चले गए और जल्द ही जनसंघ की दिल्ली इकाई के महासचिव और अध्यक्ष बने। जनसंघ में विभिन्न पदों पर काम करने के बाद, लालकृष्ण आडवाणी को कानपुर अधिवेशन के दौरान पार्टी कार्यकारिणी की बैठक का अध्यक्ष बनाया गया। अध्यक्ष के रूप में, आडवाणी ने पहली बार अभिनय करते हुए जनसंघ के वरिष्ठ नेता और संस्थापक सदस्य बलराज मधोक को पार्टी हितों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए निलंबित कर दिया।

आडवाणी और रथ यात्रा

लालकृष्ण आडवाणी हिंदुत्व के मुद्दे पर भारतीय जनता पार्टी को 2 सीटों से 182 सीटों पर लाने में सहायक थे। वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के बाद से, लालकृष्ण आडवाणी 1986 तक पार्टी के महासचिव थे। इसके बाद, उन्होंने 1986 से 1991 तक पार्टी के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी भी निभाई। इस दौरान, वर्ष 1990 में राम मंदिर आंदोलन, उन्होंने सोमनाथ से अयोध्या तक रथ यात्रा निकाली। हालाँकि, आडवाणी को बीच में ही गिरफ्तार कर लिया गया था, लेकिन इस यात्रा के बाद आडवाणी का राजनीतिक कद और बड़ा हो गया। 1990 की रथ यात्रा ने लालकृष्ण आडवाणी की लोकप्रियता को बढ़ाया। 1992 में विध्वंस के बाद, आडवाणी का नाम उन लोगों में शामिल है जिन पर आरोप लगाया गया है।

स्वच्छ छवि

राम मंदिर आंदोलन और संघ परिवार के पूर्ण आशीर्वाद के दौरान देश में सबसे लोकप्रिय नेता होने के बावजूद, आडवाणी ने 1995 में वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करके सभी को चैंका दिया। उस समय, आडवाणी खुद प्रधानमंत्री बन सकते थे, लेकिन आडवाणी ने कहा कि भाजपा में वाजपेयी से बड़ा कोई नेता नहीं है। वह पचास साल तक वाजपेयी के साथ दूसरे नंबर पर रहे। पचास साल से अधिक के राजनीतिक जीवन के बावजूद, आडवाणी पर कोई दाग नहीं लगा और जब 1996 के चुनावों से पहले कांग्रेस के नरसिम्हा राव ने विपक्ष के बड़े नेताओं को हवाला कांड में फंसाने की कोशिश की। उस समय, आडवाणी ने पहली बार यह कहते हुए इस्तीफा दे दिया कि वह बेदाग जाने से पहले चुनाव नहीं लड़ेंगे और 1996 के चुनाव के बाद उन्हें इस मामले में बरी कर दिया गया।

गुजरात से राज्यसभा के सदस्य

आडवाणी 1976 से 1982 तक गुजरात से राज्यसभा के सदस्य थे। देश में इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल के बाद, जनसंघ और कई अन्य विपक्षी दल जनता पार्टी के रूप में उभरे। आडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी 1977 में लोकसभा चुनाव लड़े और जनता पार्टी के सदस्य बने। इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल के विरोध में खड़े अन्य दलों के कई राजनेताओं और कार्यकर्ताओं ने जनता पार्टी का गठन किया।

1977 में चुनावों के बाद, केंद्र में कांग्रेस (ओ), स्वतंत्र पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया, जनसंघ और लोकदल की मदद से सरकार बनी। केंद्र में इंदिरा और मोरारजी देसाई की सरकार

www.ignited.in

के खिलाफ आपातकाल के लोगों ने मतदान किया। लालकृष्ण आडवाणी इस सरकार में सूचना और प्रसारण मंत्री बने, जबकि अटल बिहारी वाजपेयी को विदेश मंत्री बनाया गया। हालांकि, यह सरकार लंबे समय तक नहीं चली। दूसरी ओर, जनसंघ के सदस्यों ने जनता पार्टी छोड़ दी और एक नई भारतीय जनता पार्टी बनाई।

मोदी को लेकर वाजपेयी और आडवाणी में मतभेद

सभी जानते हैं कि वाजपेयी की इच्छा के बावजूद, आडवाणी के कारण, नरेंद्र मोदी का मुख्यमंत्री पद उस दिन बच गया था। खुद लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी पुस्तक "माई कंट्री माई लाइफ" में लिखा कि दो बड़े मुद्दे जिन पर वाजपेयी और मेरी राय नहीं थी, पहला था अयोध्या का मुद्दा, जिस पर वाजपेयी ने आखिरकार पार्टी की राय मान ली और दूसरी थी मामला। गुजरात दंगों को लेकर नरेंद्र मोदी के इस्तीफे की मांग आडवाणी ने लिखा कि गोधरा में बड़ी संख्या में कारसेवकों के मारे जाने के बाद गुजरात में सांप्रदायिक दंगे हुए थे। इसके बाद विपक्षी दलों ने मोदी के इस्तीफे का दबाव बढ़ा दिया था। एनडीए में कुछ दलों और भाजपा में कुछ लोगों ने भी माना कि मोदी को इस्तीफा देने के लिए कहा जाना चाहिए। लेकिन मेरी (आडवाणी) राय पूरी तरह से विपरीत थी। यह लगभग 18 साल पीछे चला जाता है जब 1984 के चुनावों में भाजपा की हार के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से नरेंद्र मोदी को भाजपा में भेजा गया था और आडवाणी ने मोदी को गुजरात में काम करने की जिम्मेदारी सौंपी थी। फिर आडवाणी की इच्छा पर उन्हें पार्टी का राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया। नरेंद्र मोदी की आडवाणी की राम रथ यात्रा की जिम्मेदारी भी नरेंद्र मोदी के पास ही रही। रथ यात्रा को देश भर में भारी समर्थन मिला, बिहार में लालू यादव की सरकार ने आडवाणी को गिरफ्तार किया, लेकिन वही आडवाणी 6 दिसंबर 1992 को कारसेवकों को अयोध्या में मस्जिद को ध्वस्त करने से रोकने की अपील कर रहे थे और मस्जिद के ढहने पर दुख व्यक्त किया।। यह और बात है कि सीबीआई ने मौजूदा सरकार में इस मुद्दे पर उसके खिलाफ चार्जशीट दायर की है।

नरेंद्र मोदी और लालकृष्ण आडवाणी

आडवाणी और नरेंद्र मोदी के बीच कई वर्षों तक गुरु-शिष्य संबंध रहे। मोदी ने गुजरात से सांसद के रूप में आडवाणी को भेजना जारी रखा। और वाजपेयी की तमाम नाराजगी के बावजूद मोदी आडवाणी का विशेष स्नेह पाते रहे। मुझे याद है कि 2009 के आम चुनाव अभियान के दौरान एक साक्षात्कार के दौरान, जब मैंने मोदी से पूछा कि क्या वह गांधीनगर को दिल्ली छोड़ना चाहते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि भाजपा में मेरे सहित हर कार्यकर्ता का सपना लालकृष्ण आडवाणी को प्रधान मंत्री बनाना है।। यानी यह रिश्ता हमेशा मजबूत रहा।

लेकिन एक बार फिर गोवा जाना होगा, 2013 में फिर से भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी थी। राजनाथ सिंह अध्यक्ष थे और अगले साल 2014 के आम चुनावों में मोदी को पीएम पद का उम्मीदवार बनाने की तैयारी की गई थी, लेकिन तब आडवाणी ने इस पर नाराजगी जताई। वह गोवा नहीं पहुंचे और उसी के कारण, उस दिन मोदी की उम्मीदवारी की घोषणा नहीं की गई, दिल्ली में आडवाणी को फिर से मनाने के प्रयास व्यर्थ साबित हुए।

www.ignited.in

आडवाणी का विवादास्पद बयान

4 जून 2005 को आडवाणी के राजनीतिक जीवन में एक और महत्वपूर्ण दिन, जब कराची में जिन्ना की समाधि पर उनके भाषण को याद करते हुए, आडवाणी ने कहा कि जिन्ना धर्मनिरपेक्ष पाकिस्तान चाहते थे। आडवाणी को लेकर हंगामा हुआ, जिसे जिन्ना की तरफ देखते हुए किया गया।

संघ के सबसे पसंदीदा नेता आडवाणी को संघ के दबाव में इस्तीफा देना पड़ा। कुछ नेताओं ने उन्हें दिल्ली में अपना बयान बदलने की सलाह भी दी थी, लेकिन आडवाणी अपनी बात पर अड़े रहे। उनके सिद्धांतों पर खड़ा होना आडवाणी की सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती है।

एक और कहानी गौर करने लायक है - देश के पहले राष्ट्रपति के चुनाव में तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को राजेंद्र प्रसाद पसंद नहीं थे, वे सी। राजगोपालाचारी को राष्ट्रपति बनाना चाहते थे, लेकिन उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल का मानना था कि व्यक्तिगत राजेंद्र बाबू को इच्छाओं के लिए उठना चाहिए और इस स्थिति में होना चाहिए क्योंकि वे अधिक योग्य हैं।

नेहरू को धक्का लगा, तब उन्होंने कांग्रेस सांसदों की बैठक में राजगोपालाचारी का नाम लिया, लेकिन उन्हें समर्थन नहीं मिला। इसके बाद, जब पटेल ने राजेंद्र बाबू के नाम का प्रस्ताव रखा, तो कांग्रेस के सांसदों ने इसका जोरदार समर्थन किया।

उस समय मामला सुलझ गया और नेहरू ने अपनी हार स्वीकार कर ली और प्रधानमंत्री की अनिच्छा के बावजूद राजेंद्र बाबू पहले राष्ट्रपति बने।

वन मैन शो पार्टी

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भले ही नरेंद्र मोदी खुद को सरदार पटेल की तरह मानते हैं, लेकिन वे एक और पटेल को बर्दाश्त नहीं करते हैं जिन्होंने अपनी सरकार और पार्टी में कोई विरोध व्यक्त किया हो। हालांकि, वास्तविकता यह है कि इस कद और ताकत का कोई अन्य नेता आज पार्टी और सरकार में नहीं देखा जा सकता है, जो विरोध का स्वर व्यक्त कर सके।

विश्लेषकों के अनुसार, अब सरकार और पार्टी केवल एक आदमी शो हैं। इसका नतीजा यह है कि लालकृष्ण आडवाणी, जिन्होंने गृह मंत्री रहते हुए खुद छोटा सरदार पटेल की छवि बनाई थी, अगर वह चाहें तो अगले राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे। लेकिन किसी ने मुझसे सवाल किया कि क्या राजनीति में भी ऐसा होता है?

निष्कर्ष

हालाँकि राजनीति के लौह पुरुष कहे जाने वाले आडवाणी अब पहले की तरह राजनीति में सक्रिय नहीं हैं, लेकिन एक समय था जब वे प्रधानमंत्री बनने के प्रबल दावेदार थे। लेकिन समय इतना बदल गया कि वह इंतजार में पीएम बने रहे। उन्होंने निश्चित रूप से उप प्रधान मंत्री का पद संभाला लेकिन 2004 में जब उन्हें पीएम पद का उम्मीदवार बनाया गया, तो भाजपा चुनाव नहीं जीत सकी। उनके सिद्धांतों पर खड़ा होना आडवाणी की सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती है। भारतीय राजनीति में एक प्रमुख पार्टी बनाने में उनके योगदान को सर्वोपरि कहा जा सकता है। वह कई बार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। जब भी भारतीय जनता पार्टी के इतिहास की बात होती है, तो यह देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी की चर्चा के बिना अधूरी रहेगी।

सन्दर्भ सूची

1. जिरहनामा, कनक तिवारी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. कर्पूरी ठाकुर, रवि शंकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. नजरबंद लोकतंत्र, लालकृष्ण आडवाणी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
4. मैं दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ, अमरजीत सिंह, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आडवाणी भी है जरूरी, जनजागरण समाचार, 09 जुलाई 2013

Corresponding Author

Dr. Karamveer Singh*

Associate Professor, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in